PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Psychology
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

ग्रामीण एवं नगरीय युवाओं में सहायतापरक व्यवहार

• अनुराधा • श्वेता रंजन • नंदनी झा
• नीना वर्मा

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Neena Verma

Abstract : प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य युवाओं में सहायतापरक व्यवहार का अध्ययन करना, ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना, सहायतापरक व्यवहार में पाये जानेवाले लिंग-भेद का अध्ययन करना एवं युवाओं में सहायतापरक व्यवहार को प्रोत्साहित करना था। इस शोध में निम्नांकित प्राक्कल्पनाओं को परिकल्पित किया गया-(क) सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण युवाओं में नगरीय युवाओं की तुलना में अधिक होगा, (ख) ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी एवं (ग) नगरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी। प्रतिदर्श के रूप में *18-22* वर्षों के *100* युवाओं का चयन आकस्मिक-सह-सोद्येश्य नमूना *(Incidetnal-cum-purposive sampling)* विधि द्वारा किया गया। प्रदत संग्रहण ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के *6* विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से किया गया। सहायतापरक व्यवहार को मापने के लिए *Nickell, G. (1998)* द्वारा निर्मित *Helping Attitude Scale (HAS)* का उपयोग किया गया। परिणामों की व्याख्या परिमाणात्मक रूप में की गयी जिसमें माध्य, मानक विचलन तथा टी अनुपात का उपयोग किया गया। शोध के पहले परिणाम में यह पाया गया कि ग्रामीण युवा में सहायतापरक व्यवहार नगरीय युवा की तुलना में कम है जो शोध की पहली प्राक्कल्पना का समर्थन प्रदान नहीं करता है। दूसरी प्राक्कल्पना के अनुरूप परिणाम में यह पाया गया कि ग्रामीण युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में लैंगिक भिन्नता होती है। सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्राओं में अधिक पाया गया। तीसरे प्राक्कल्पना के परिणाम में नागरीय युवा छात्रों एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जो शोध को प्राक्कल्पना को समर्थन प्रदान नहीं करता है शोधकर्ताओं द्वारा यह सुझाव दिया गया कि जागरूकता अभियान के दौरान युवाओं को दूसरों की मदद करने के संबंध में जागरूक किया जाना चाहिए एवं अभिभावकों को बच्चों को बचपन से ही सहायतापरक व्यवहार के बारे में शिक्षा देनी चाहिए।

संकेत शब्दः- सहायतापरक व्यवहार, ग्रामीण, नगरीय, युवा।

अनुराधा

B.A. III year, Psychology (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

श्वेता रंजन

B.A. III year, Psychology (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

नंदनी झा

B.A. III year, Psychology (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

नीना वर्मा

Assistant Professor, Department of Psychology,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : neenaverma55@gmail.com

परिचयः

सहायतापरक व्यवहार से तात्पर्य वैसे व्यवहार से होता है जिसमें व्यक्ति अपने स्वेच्छा से दूसरे व्यक्तियों को साहायता या लाभ पहुँचाता है, जिससे दूसरे व्यक्ति की चिंताएँ कम होती हैं तथा होने वाले संकट से उसे छुटकारा मिलता है समाजशास्त्रियों के अनुसार गाँव का तात्पर्य एक विशेष स्थानीय क्षेत्र से नहीं होता बल्कि गाँव जीवन का एक विशेष तरीका है एवं नगर एक ऐसा समाज है जिसे दूसरे समाजों से जनसंख्या के आकार और घनत्व, व्यवसाय की प्रकृति तथा सामाजिक संबंधों की भिन्नता के आधार पर पृथक किया जा सकता है। युवा से तात्पर्य वैसे वर्ग से होता है, जिनकी उम्र सीमा 20–35 वर्षों के बीच होती है।

उद्देश्य:

21वीं शताब्दी का भारत एक ओर जहाँ तकनीकी एवं विज्ञान के क्षेत्र में उच्चतम शिखर की ओर बढ़ रहा है वहीं दूसरी ओर भारतीयों में मानवीय एवं नैतिकता का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। विशेषकर युवा-पीढ़ी में नैतिक अवमूल्यन की घटना प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में निम्नांकित उद्देश्यों को सम्मिलित किया गया।

- युवाओं में सहायतापरक व्यवहार का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं नागरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सहायतापरक व्यवहार में पाये जानेवाले लिंग भेद का अध्ययन करना।
- युवाओं में सहायतापरक व्यवहार को प्रोत्साहित करना।

प्राक्कल्पना:

उपर्युक्त उद्देश्य के आलोक में निम्नांकित प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया गया

1. सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण युवाओं में नागरीय युवाओं की तुलना में अधिक होगा।
2. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी।
3. नगरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी।

अध्ययन की विधि:

प्रतिदर्श के रूप में 100 युवाओं का चयन किया गया। जिनकी उम्र 18-30 वर्षों के बीच थी और जो स्नातक के छात्र एवं छात्राएँ थे। प्रतिदर्श का चयन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र से, आकस्मिक-सह-सोद्देश्य-नमूना विधि के द्वारा किया गया।

शोध क्षेत्र :

नगरीय क्षेत्र से प्रदत संग्रह के लिए पटना वीमेंस कॉलेज, बिहार नेशनल कॉलेज, पटना कॉलेज तथा सायंस कॉलेज का चयन किया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र से प्रदत संग्रह के लिए बेगूसराय ग्राम में अवस्थित पंकज कोचिंग संस्थान तथा गंगा देवी कोचिंग संस्थान का चयन किया गया।

शोध उपकरण:

शोध उपकरण के रूप में Nickell, G.(1998) द्वारा निर्मित Helping Attitude Scale का उपयोग किया गया। इस आविष्कारिका की विश्वसनीयता 0.86 है। इस आविष्कारिका में एकांशों की कुल संख्या 20 है। इसका उपयोग सहायतापरक व्यवहार को मापने के लिए किया गया। प्रत्येक एकांश के लिए पाँच अनुक्रिया उत्तर (Strongly Disagree, Disagree, Undecided, Agree and Strongly Agree) दिए गए है।

परिणाम व्याख्या:

प्राप्त आँकड़ों का परिमाणात्मक विश्लेषण सांख्यिकीय आधार पर किया गया। परिमाणात्मक व्याख्या के लिए माध्य, मानक विचलन तथा टी-अनुपात का उपयोग किया गया। परिणाम की व्याख्या शोध की प्राक्कल्पनाओं के आलोक में की गयी।

प्राक्कल्पना संख्या 1 की घोषणा थी कि ''सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण युवाओं में नगरीय युवाओं की तुलना में अधिक होगा।'' तालिका संख्या 1 इस प्राक्कल्पना से संबंधित सांख्यिकी प्राप्तांकों को प्रर्दशित कर रहा है।

संपूर्ण प्रतिदर्श को ग्रामीण युवा छात्रों एवं छात्राओं तथा नगरीय छात्र एवं छात्राओं में विभाजित किया गया। Helping Atttitude Sacle पर ग्रामीण युवाओं के प्राप्तांकों का माध्य 75.6 है तथा नगरीय युवाओं का माध्य 77 है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि नगरीय युवाओं में सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण युवाओं की तुलना में अधिक है। प्रतिदर्श द्वारा दिए गए उत्तरों के बीच आंतरिक संगतता की जाँच के लिए मानक विचलन ज्ञात किया गया। इस संदर्भ में ग्रामीण युवाओं का मानक विचलन 7.90 है तथा नगरीय युवाओं का मानक विचलन 9.47 है। ग्रामीण युवाओं एवं नगरीय युवाओं के द्वारा प्राप्त माध्यों के बीच पाए जानेवाले अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए टी अनुपात ज्ञात किया गया। प्राप्त टी अनुपात टेबल मान (1.987) से काफी कम है जो इस बात की ओर इशारा करता है कि प्राप्त टी अनुपात 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। परिणाम को देखते हुए कहा जा सकता है कि ग्रामीण युवाओं एवं नगरीय युवाओं के माध्यों के बीच जो अंतर है वह वास्तविक अंतर नहीं है बल्कि किसी संयोगवश आया है। दूसरे शब्दों में प्राप्त परिणामों द्वारा शोध की पहली प्राक्कल्पना सिद्ध नहीं हो रही है। इसके विपरीत Aydinli, Michel Bender एवं उनके सहयोगियों (2013) द्वारा किए गए शोध में यह पाया गया था कि सहायतापरक

व्यवहार में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता पायी जाती है एवं आपातकालीन स्थिति में सहायता प्रदान करने की प्रवृति ग्रामीण युवाओं में नगरीय युवओं की तुलना में अधिक होती है।

प्राक्कल्पना संख्या 2 में कहा गया कि 'ग्रामीण युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी।' इस प्राक्कल्पना की व्याख्या तालिका संख्या 2 द्वारा की गयी है

प्रतिदर्श को ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं में विभाजित किया गया। Helping Attitude Sclae पर ग्रामीण छात्रों का माध्य 65.5 एवं ग्रामीण छात्राओं का 85.8 है। तालिका संख्या 2 से प्रदर्शित होता है कि सहायतापरक व्यवहार ग्रामीण छात्राओं में ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है। प्रतिदर्श द्वारा दिए गए उत्तरों के बीच आंतरिक संगतता की जाँच के लिए मानक विचलन ज्ञात किया गया। तालिका दिखाती है कि ग्रामीण छात्रों का मानक विचलन 10.3 एवं ग्रामीण छात्राओं का 4.27 है। ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं द्वारा प्राप्त माध्यों के बीच पाए जानेवाले अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए टी अनुपात ज्ञात किया गया जो 8.93 पाया गया। चूकी टेबल मान df 48 पर 0.01 स्तर पर 2.678 है और प्राप्त टी अनुपात टेबल मान से काफी अधिक है, यह इस बात की ओर इशारा करता है कि प्राप्त टी अनुपात 0.01स्तर पर सार्थक है एवं इस आधार पर ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के माध्य मानों के बीच का अंतर वास्तविक है। प्राप्त परिणाम शोध की दूसरी प्राक्कल्पना 'ग्रामीण युवाओं मं सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी' को सर्मथन कर रहा है।

एवं ग्रामीण छात्राओं का 4.27 है। ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं द्वारा प्राप्त माध्यों के बीच पाए जानेवाले अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए टी अनुपात ज्ञात किया गया जो 8.93 पाया गया। चूकी टेबल मान df 48 पर 0.01 स्तर पर 2.678 है और प्राप्त टी अनुपात टेबल मान से काफी अधिक है, यह इस बात की ओर इशारा करता है कि प्राप्त टी अनुपात 0.01स्तर पर सार्थक है एवं इस आधार पर ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के माध्य मानों के बीच का अंतर वास्तविक है। प्राप्त परिणाम शोध की दूसरी प्राक्कल्पना 'ग्रामीण युवाओं मं सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी' को सर्मथन कर रहा है।

प्राक्कल्पना संख्या 3 में कहा गया कि ''नगरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होगी।'' इस प्राक्कल्पना की व्याख्या तालिका संख्या 3 के द्वारा की गई है।

तालिका संख्या 3 से प्रदर्शित होता है कि नगरीय छात्रों का माध्य 76.2 एवं छात्राओं का 77.8 है। यद्यपि नगरीय छात्रों में सहायतापरक व्यवहार नगरीय छात्र की तुलना में कुछ अधिक है, यद्यपि यह अंतर काफी कम है। प्रतिदर्श द्वारा दिए गए उत्तरों के बीच आंतरिक संगतता की जाँच के लिए मानक विचलन ज्ञात किया गया, जो छात्र एवं छात्राओं के लिए क्रमशः 10.8 हैं एवं 7.8 प्राप्त हुआ। दोनों माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए टी अनुपात ज्ञात किया गया। प्राप्त टी अनुपात का मान 0.733 है। टेबल मान df 38 पर 0.05 स्तर की सार्थकता पर 2.008 है और चूँकि यह मूल्य प्राप्त टी अनुपात टेबल मान से काफी कम है, मानना चाहिए कि प्राप्त टी-अनुपात सार्थक नहीं है एवं नगरीय छात्र एवं छात्राओं के माध्य मानों के बीच अंतर वास्तविक नहीं है। दूसरे शब्दों में परिणाम के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नगरीय क्षेत्र के युवाओं में सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता नहीं होती है। यह परिणाम प्राक्कल्पना संख्या 3 का समर्थन नहीं कर रहा है।

Elizebeth Monk-Turner (2002) के द्वारा पूर्व में किए गए शोध परिणाम में यह पाया गया था कि सहायतापरक व्यवहार में लैंगिक भिन्नता नहीं पयी जाती है बल्कि महिला एवं पुरूष दोनों जरूरतमंदों की मदद समान रूप से करते हैं। प्रस्तुत शोध परिणाम इस का समर्थन कर रहा है।

निष्कर्ष :

1. सहायतापरक व्यवहार नगरीय युवाओं में ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।
2. ग्रामीण युवाओं एवं नगरीय युवओं के माध्य मानों के बीच का अंतर सार्थक नहीं पाया गया जो इंगित करता है कि दोनों समूहों के माध्यों के बीच का अंतर वास्तविक नहीं है।
3. ग्रामीण छात्राओं में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा सहायतापरक व्यवहार अधिक पाया गया।
4. प्रस्तुत शोध के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण युवाओं के सहायतापरक व्यवहार में सार्थक लैंगिक भिन्नता होती है।
5. नगरीय क्षेत्र के युवा छात्राओं एवं छात्रों के सहायतापरक व्यवहारों में सार्थक लैंगिक भिन्नता नहीं पायी गयी।

सुझाव :

1. जागरूकता अभियान के दौरान युवाओं को दूसरों की मदद करने के संबंध में जागरूक किया जाना चाहिए।
2. समय समय पर सेमिनार तथा कार्यशाला आयोजित कर युवाओं को सहायतापरक व्यवहार को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. अभिावकों द्वारा बच्चों को बचपन से ही सहायतापरक व्यवहार के लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. वर्ग में शिक्षकों को भी सहायतापरक व्यवहार के लिए छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।

LIST OF TABLES

तालिका संख्या 1. हेलपिंग ऐटिट्यूड स्केल पर ग्रामीण युवा एवं नगरीय युवा द्वारा प्राप्तअंकों का माध्य, मानक विचलन, टी-अनुपात, df एवं सार्थकता स्तर

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात	df	सार्थकता स्तर
ग्रामीण-युवा छात्र एवं छात्रा	50	75.6	7.90	0.807	98	P>0.05 (असार्थक)
नगरीय-युवा छात्र एवं छात्रा	50	77	9.47			

टेबल मान 0.05 के स्तर पर 1.987

तालिका संख्या 2. हेल्पिंग ऐटिट्युड स्केल (Helping Attitude Scale) पर ग्रामीण युवा छात्रों एवं छात्राओं द्वारा अंको का माध्य, मानक विचलन, टी-अनुपात, df एवं सार्थकता स्तर

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात	df	सार्थकता स्तर
ग्रामीण-छात्र	25	65.5	10.3	8.93	48	P<0.01
ग्रामीण-छात्रा	25	85.8	4.27			

टेबल मान 0.01 के स्तर पर 2.678

तालिका संख्या 3. हेल्पिंग ऐटिट्युड स्केल (Helping Attitude Scale) पर नगरीय युवा अर्थात् छात्र एवं छात्राओं द्वारा प्राप्त अंकों का माध्य, मानक विचलन, टी-अनुपात, df एवं सार्थकता स्तर

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात	df	सार्थकता स्तर
नगरीय छात्र	25	76.2	10.8	0.733	48	P>0.05
नगरीय छात्रा	25	77.8	7.8			

टेबल मान 0.05 के स्तर पर 2.008

संदर्भ :

Aydinli. A; Bender, M., and Chariotis, A. (2013). Online Readings in Pyschology and Culture, International Association for corss-cututral psychology, volume 5, issue 3, page no. 1-27 htt//:scholarworks.gvsu.edu/orpc/vol.5/

Agrawal, G. K. (2008). समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिर्श, पृष्ठ संख्या 79-90

सिंह, ए. के. (2010). समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, सातवां संस्करण, पृष्ठ संख्या 542-553

सिंह ए. के. (2013). मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सांख्यिकी, नोवेल्टी एण्ड कंपनी, सोलहवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 224-24

Nickell. G, (1998). Helping Attitude Scale, http://fetzer.org,helipingothers. Helping Attitude Scale.Pdf.

Turner, EM, Blake, v. cheniel, F, Forbes, S., Lensey, L. and Madzuma, J. (2002). 'Helping Hands: A Study of Altruistic Behaviour,' Article in Genderissue: september-2002.